संपादकीय

वर्तमान में स्कूलों में बढ़ती हिंसा हम सब के लिए एक चिंता का विषय बन गयी है। आज़ादी के छः दशकों के हमारे मज़बूत शैक्षिक प्रयासों के बावजूद भारतीय मूल मूल्यों का धीरे-धीरे कमज़ोर होना, विदेशी संस्कृति का हावी होना कहीं-ना-कहीं हम सब की भूमिका निर्वाह पर एक प्रश्न चिह्न छोड़ता जा रहा है। हम अभिभावक हैं या शिक्षक, योजना बनाने वाले हैं या प्रशासक, लेखक हैं या पत्रकार, हम सबकी शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका है। कहीं तो हम पाठ्यचर्चा का विकास करके मूल मूल्यों के हस्तांतरण की ओर अपना कर्त्तव्य निभाते हैं तो दूसरी ओर पाठ्यचर्या को कक्षा में क्रियान्वित करके। घरों में हम अभिभावक के रूप में सीखे हुए मूल्यों को बल प्रदान करते हैं, तो पत्रकारों और समीक्षकों तथा समुदाय के अन्य सदस्यों के रूप में कहाँ गलत और कहाँ सही हो रहा है, इसकी जानकारी देकर सुधार की प्रक्रियाओं के लिए गुहार लगाते हैं। इसमें संदेह नहीं है कि हम सभी शांति की संस्कृति के समर्थक हैं और उसको बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत हैं। तो फिर क्या गलत हो रहा है कि हम विद्यालयी शिक्षा के कुछ क्षेत्रों में लगातार चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। क्या बदलते सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक संदर्भों में हमें स्कूली शिक्षा के लिए स्वयं के प्रयत्नों का व्यापक मूल्यांकन करने की आवश्यकता है? क्या हमें स्कूली बच्चों के विकास के शुरुआती वर्षों पर गहराई से मनन कर उन्हें उसके लिए मज़बूत सहायता देने की आवश्कयता है? क्या हमें शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों का पूर्ण रूप से मानवीयकरण करने की आवश्यकता है? शायद ये प्रश्न हम सभी को झकझोरते हैं और इसलिए आधुनिक चिंतक, विचारक, शिक्षाविद्, भाषाविद्, विशेषज्ञ लेखक इन प्रश्नों को अपने लेखों के माध्यम से अक्सर सम्बोधित करने का प्रयास करते हैं। एक प्रयास हमने भी किया है यहाँ पर, इस अंक में इन प्रश्नों से संबंधित प्राप्त लेखों को सामने रखने का।

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा पर एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा बनाए गए फोकस ग्रुप के आधार पत्र के कुछ चुनिंदा अनुच्छेदों को इस अंक में स्थान दिया गया है, जो संबंधित पणधारियों की मदद् करेंगे – इस स्तर के लिए बाल केंद्रित, बाल उपयोगी पाठ्यचर्या के निर्माण में मार्गदर्शन देने में समृद्ध और सर्वांगीण विकास के लिए बच्चों को विविध अवसर देना बहुत आवश्यक होता है और यह अवसर उन्हें कई तरह के सामाजिक मूल्यों को ग्रहण करने में सहायता देते हैं। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा किए गए ऐसे प्रयासों पर आधारित एक लघु रिपोर्ताज 'बच्चों का कोना' जो इस अंक में शामिल है, विद्यालयों के लिए नवाचार हेतु मार्गदर्शन का कार्य कर सकता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि विद्यालय एक सामाजिक संस्था है जो राज्य और समाज के बीच मज़बूत संबंध बनाती है और समाज को अच्छे नागरिक देने को प्रतिबद्ध है। इस अंक में शामिल आंद्रे बेते का लेख 'एक संस्थान के तौर पर विद्यालय' हमें विद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका को समझने में मदद् करता सा प्रतीत होता है। स्कूली विषय संबंधी सरोकारों तथा अन्य सरोकारों से संबंधित कुछ रोचक लेख जैसे- 'शब्द, संवेदना तथा समझ'; 'कक्षा शिक्षण में कौशलों के प्रयोग की व्यावहारिकता – एक सर्वेक्षण'; 'भिन्न योग्यता के विद्यार्थियों हेतु संगीत शिक्षा के विशिष्ट लाभ'; 'महाकवि भतृहरि की व्याख्यान विधि' की आधुनिकता; 'शोध और शिक्षण– साहित्य के संदर्भ में'; 'आलोचना और विचारधारा'; 'राजनीति विज्ञान का अध्यापन'; 'जीवन कौशलों की शिक्षा प्रदान करने में घर, समुदाय, जनसंचार माध्यम तथा विद्यालय की भूमिका' हमें शिक्षा के विविध पहलुओं पर मनन करने हेतु सामग्री प्रदान करते हैं, साथ ही अभिप्रेरित करते हैं शिक्षा को सही दिशा देने में और हमारी स्वयं की भूमिकाओं का आत्मविश्लेषण करने के लिए। शैक्षिक पहलुओं पर बात की जा रही हो और शिक्षक-शिक्षा पर बात न हो ऐसा कम ही होता है। शिक्षक-शिक्षा स्कूली शिक्षा के साथ जुड़ा एक ऐसा पहलू है जिस पर आज हम सबकी नज़रें गंभीरता से गड़ी हुई हैं। पाठ्यचर्या में किसी भी सुधार की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में शिक्षक को देखा जा रहा है। शिक्षक को बदलते परिवेश में इस भूमिका में भी देखा जा रहा है कि वह विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों का सुदृढ़ीकरण करे क्योंकि वर्तमान में भारतीय परिवारों के बदलते रूप, माता और पिता दोनों की ही जीविकोपार्जन में संलग्नता बच्चे के लिए विद्यालय और शिक्षक को बहुत ही महत्वपूर्ण बना रही है। रही सही कसर शिक्षा का अधिकार अधिनियम पूरी कर देता है। शिक्षक की भूमिका और शिक्षक-शिक्षा के मानवीयकरण की विहंगम दृष्टि देते हुए इस अंक में शामिल दो लेख हमारे बीच एक सतत् संवाद करने की आवश्यकता पर बल देते हैं।

आप सब से अनुरोध है शिक्षक-शिक्षा के कार्यक्रमों में सुधार हेतु अपने विचार हमें प्रेषित करें। आपके विचारों को हम अपने आगे आने वाले अंकों में अवश्य शामिल करेंगे। नए शैक्षिक सत्र हेतु शुभकामनाओं के साथ।

अकादमिक संपादकीय समिति